

विनय पाठ

(दोहा)

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ ॥१॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सरताज ।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज ॥२॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि-शोषणहार ।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव-सुख के करतार ॥३॥
हर्ता अघ अँधियार के, कर्ता धर्म-प्रकाश ।
थिरता-पद दातार हो, धर्ता निजगुण रास ॥४॥
धर्मामृत उर जलधि सौँ, ज्ञानभानु तुम रूप ।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ-जग भूप ॥५॥
मैं बन्दौं जिनदेव को, करि अति निरमल भाव ।
कर्म-बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव ॥६॥
भविजन कौँ भव-कूप तैं, तुम ही काढ़नहार ।
दीन-दयाल अनाथ-पति, आतम गुण भंडार ॥७॥
चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म-रज मैल ।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव-गैल ॥८॥
तुम पद-पंकज पूजतैं, विघ्न-रोग टर जाय ।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय ॥९॥
चक्री सुर खग इन्द्र पद, मिलैं आप तैं आप ।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप ॥१०॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जलबिन मीन ।
जन्म-जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन ॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव ।
अंजन से तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव ॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय ।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव ॥१३॥

राग सहित जग में रूल्यो, मिले सरागी देव ।
 वीतराग भेटचौ अबै, मेटो राग कुटेव ॥१४॥
 कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अजान ।
 आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान ॥१५॥
 तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव ।
 धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव ॥१६॥
 अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार ।
 मैं डूबत भव-सिन्धु में, खेव लगाओ पार ॥१७॥
 इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान ।
 अपनो विरद निहारि कै, कीजे आप-समान ॥१८॥
 तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार ।
 हा हा डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार ॥१९॥
 जो मैं कहहूँ और सौं, तो न मिटै उरझार ।
 मेरी तो तोसौं बनी, यातैं करौं पुकार ॥२०॥
 वंदौ पाँचों परमगुरु, सुर-गुरु वंदत जास ।
 विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश ॥२१॥
 चौबीसौं जिनपद नमों, नमों शारदा माय ।
 शिवमग साधक साधु नमि, रच्यौ पाठ सुखदाय ॥२२॥

(मंगल पाठ)

(दोहा)

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान ।
 हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान ॥१॥
 मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहन्तदेव ।
 मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दूँ स्वयमेव ॥२॥
 मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय ।
 सर्व साधु मंगल करो, वन्दूँ मन-वच-काय ॥३॥
 मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म ।
 मंगलमय मंगल करण, हरो असाता कर्म ॥४॥
 या विधि मंगल करनतैं, जग में मंगल होत ।
 मंगल नाथूराम यह, भवसागर दृढ़ पोत ॥५॥